पंजाब

पंजाब का गोपालन विश्व में प्रसिद्ध है. गोपालन के कारण ही पंजाब में सिंह के समान साहसी एवं अदभुत गुणों से युक्त लोग पैदा हुए हैं. पंजाब ने गोवंश के संवर्धन एवं बचाने अदभुत त्याग किया है.

गुरु नानक देव जी से लेकर गुरु गोविन्द सिंह जी तक 10 गुरुओं ने गोवंश के संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए नया इतिहास रच दिया है.

गुरु गोविंद सिंह जी ने गोवंश की रक्षा करने के लिए सिख धर्म की स्थापना की थी और कहा था कि एक एक को सवा लाख से लड़ाउ तो गुरु गोविन्द सिंह कहलाउ.

पंजाब में साहीवाल के कारण ही आर्थिक उन्नति चरम सीमा पर थी. साहीवाल ने दूध देने के विश्व किर्तीमान बनाये हैं. साहीवाल 19 देशों में दूध देने के लिए वर्तमान में मौजूद है.

साहीवाल के विकास करने के लिए बहुत ही विशाल एवं आक-र्ाक मेले लगाये गये थे. पंजाब में एक समय दूध की नदियां बहती थी. पंजाब की समृद्धि गोवंश के पालन के कारण ही रही है.

जैविक राज्य

100 प्रतिशत जैविक राज्य बनने पर पंजाब दूध उत्पादन में प्रथम आयेगा.

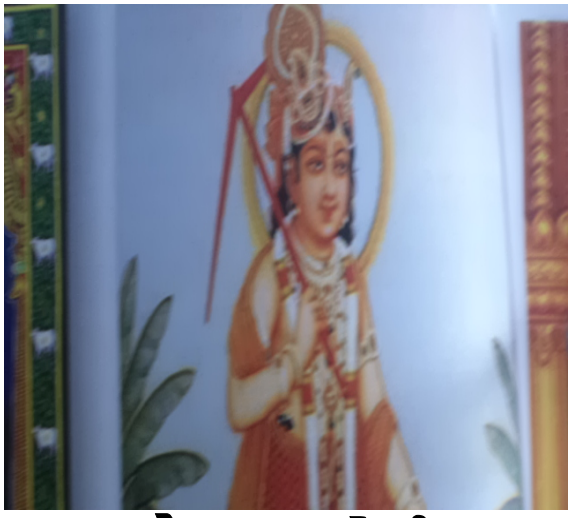

जैविक बोर्ड

जिस तरह से 2003 में सिक्किम ने सबसे पहले जैविक बोर्ड बनवा कर रासायनिक खाद तथा कीटनाशक पर पूर्ण प्रतिबंध लगवाया था ठीक सिक्किम की तरह ही पंजाब को जैविक बोर्ड की स्थापना कर रासायनिक खाद तथा कीटनाशक की बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने के लिए कड़े कदम उठाने की आवश्यकता है.

रासायनिक खाद के कारण पंजाब में किसान आत्महत्या कर रहे हैं.

अमेरिका में 72 करोड़ एकड़ भूमि रासायनिक खाद के कारण ही पूरी तरह से बंजर हो गयी तब अमेरिका को भी अपनी गलती का अहसास हुआ है.

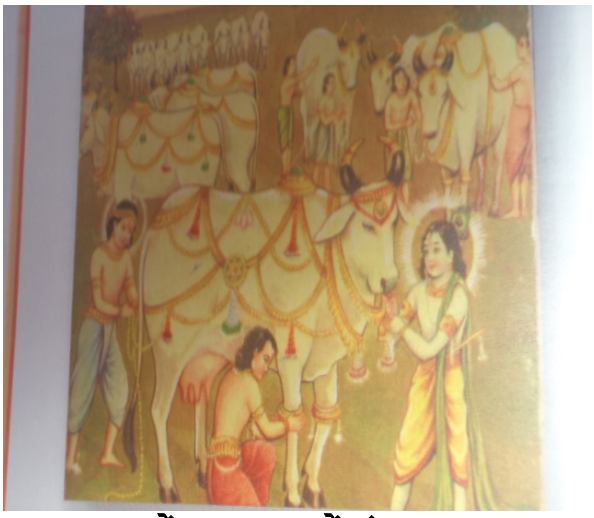

दूध उत्पादन में 2011-12 में पंजाब कुल दूध का 95.4 लाख मिट्रिक टन उत्पादन किया है. पंजाब वापस दूध उत्पादन में प्रथम आने के लिए हर तरह से प्रयत्नशील है.

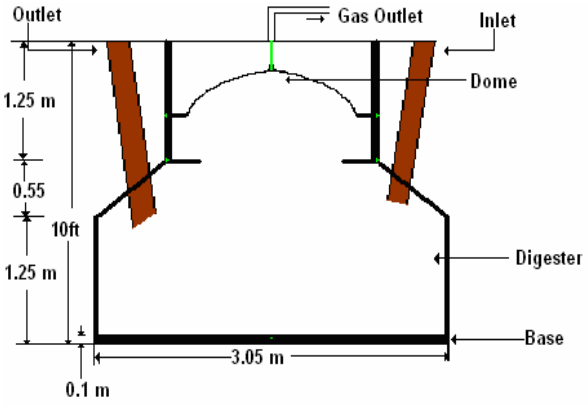

गोबर गैस

पंजाब राज्य में 4 लाख 11 हजार पारिवारिक गोबर गेस संयंत्र लगाने का लक्ष्य है लेकिन 80,682 पारिवारिक गोबर गैस संयंत्र ही लग पाये हैं. कार्बन क्रेडिट के बारे में बहुत ही कम जागरुकता है जिसके कारण ही गोबर गैस का कार्य बहुत ही कम हो रहा है.

गोशालाओं और पांजरापोलों में पर्यावरण की सुरक्षा को ध्यान में रखकर बढ़ती हुई उर्जा की मांग को ध्यान में रखकर गोबर गैस संयंत्रों की नींव रखी गयी है. पंजाब में वहां के लोगों में गोवंश के प्रति बहुत ही अच्छी भावना मौजूद है.

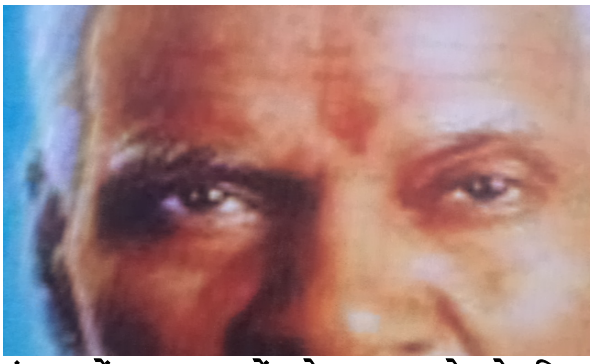

पंजाब में हर घर में गोपालन करने के लिए संगठित हेकर अभियान चलाने के लिए अखिल विश्व गायत्री परिवार सक्रिय है.

पंजाब में साहीवाल नस्ल के विकास पर ध्यान देने की आवश्यकता है. गीर गोवंश को भी गोशालाओं में रखकर दूध उत्पादन करने की आवश्यकता है.

लाल सिंधी को एक बार फिर से दूध उत्पादन करने के लिए विकसित करने की आवश्यकता है.

पंजाब में गोसेवा आयोग को भी 2009 में अप्रेल माह से प्रारम्भ किया जा रहा है. 10 सालों तक की सजा गोहत्या करने वालों को होगी. गोवंश के विकास करने के लिए कामधेनु विश्वविद्यालय की भी तुरन्त ही आवश्यकता है.

कामधेनु चेनल पंजाबी में प्रारम्भ करने के लिए हमें विचार करना है. पंजाब में संकर नस्ल को बढ़ाने के लिए केंद्र एवं राज्य सरकार के द्वारा जी जान से प्रयत्न किया गया है.

भारत में साहीवाल नस्ल का निरन्तर पतन हो गया है. लाल सिंधी नस्ल 33 देशों में पायी जाती हैं. लाल सिंधी का भारत में निरंतर पतन हुआ है. बकरी से 45 टन दूध मिल रहा है.

provided by Hoard's Dairyman

वर्णसंकर को बढ़ावा

2089 टन

बहुत अधिक ताकत के साथ संकर नस्ल की गायों 15,31,000 के दूध का कुल उत्पादन 2089 टन दूध का उत्पादन हुआ है.

संकर नस्ल के जानवरों का विकास विश्व में दूध के उत्पादों के लिए है.

चीज, पनीर, मक्खन, घी, तथा मांस के लिए हुआ है.

भारत में भी दूध उत्पादन में विश्व की प्रसिद्ध जर्सी, होलीस्टीन फ्रीजीयन, ब्राउन स्वीस, इलवारा का बोलबाला है.

वर्तमान में खोए की मिठाईयों, छन्ने की मिठाईयों के लिए संकर जानवरों का दूध ही प्रयोग किया जा रहा है.

डेयरी उद्योग में देशी या संकर के दूध में कोई अंतर नहीं है. वर्णसंकर जानवरों का आयात बहुत ही कठिन एवं मंहगे मे किया गया है. कृत्रिम गर्भाधान पर केंद्र सरकार के द्वारा पूरा जोर दिया गया है.

वर्णसंकर सांढ का आयात विश्व से बहुत ही मंहगे में किया गया है.

जर्सी गाय अपने भार से 13 गुना दूध देती है.

117 टन

भारतीय गायों 5,08,000 से मात्र 117 टन दूध का उत्पादन हुआ है.

वसा के आधार पर दूध के मूल्य का निर्धारण करने के कारण ही गाय के दूध का मूल्य कम मिलने के कारण ही साहीवाल के दूध के उत्पादन में भी पंजाब में कमी आयी है.

89 लाइसेंस प्राप्त कतलखानों के कारण ही भारतीय गोवंश की संख्या में उल्लेखनीय कमी आयी है.

नंदी के विकास पर सरकार ने ध्यान नहीं दिया है. भारतीय नस्ल की गायों के विकास पर ध्यान देने की आवश्यकता है. नंदी के विकास करने के लिए 384 गोशालाओ में अभियान की आवश्यकता है.

भैंस का विकास चरम सीमा पर

पंजाब में वर्तमान में भैंस पालन करने पर अधिक जोर दिया गया है. वसा के आधार पर दूध के मूल्य का निर्धारण करने के कारण भैंस के दूध का मूल्य भी तेजी के साथ बढता ही जा रहा है. कम से कम 7 प्रतिशत वसा भैंस के दूध में रहती ही है.

गलत तरीका

भैंस के दूध निकालने के लिए ओक्सीटोसिन के इंजेक्शन का उपयोग किया जा रहा है.

6140 टन

भैंसों से 6140 टन दूध का उत्पादन हुआ है. भैंसों का दूध हर साल बढ़ रहा है. पंजाब में भैंसों को बहुत ही अधिक बढ़ावा दिया जा रहा है. सरकार भैंस के पालन को बढ़ावा देने के लिए नगद पुरुस्कार दे रही है.

अमृतसर

श्री रामनाथ सरीन 9915223456, श्री मुरारीलाल बतरा 0183-2482784, श्री ताराचंद शर्मा 9463649091,

द्वारकाधीश मंदिर

कामधेनु का संवर्धन करने के लिए वै-णवों के द्वारा सक्रियता के साथ में कार्य किया जा रहा है. श्रीमद वल्लभाचार्य जी के सिद्धांतों के अनुसार श्री द्वारकाधीश जी का मंदिर मंडी में है.

राजकीय पशुपालन विभाग

प्राचीन समय में अपार गोचर भूमि रहने के कारण ही गोवंश बहुत ही सुखी था. राजकीय पशुपालन विभाग पंजाब के द्वारा साहीवाल के संवर्धन करने के लिए प्रयत्न किया गया था.

पिंजरापोल गोशाला

पिंजरापोल गोशाला अमृतसर साहीवाल के लिए प्रयत्नशील है. अमृतसर दूध उत्पादन करने के लिए पंजाब में बहुत ही प्रसिद्ध है. अमृतसर में सम्पन्नता चरम सीमा पर रही है.

मेले

अमृतसर में साहीवाल गोवंश के संवर्धन करने के लिए बहुत ही विशाल एवं भव्य मेलों का आयोजन किया जाता था. मेलों में गोवंश के प्रदर्शन करने के लिए दूर दूर से लोग बहुत ही उत्साह के साथ आते थे. बैलों की उंची कीमतें बोली जाती थी.

गोवंश के प्रदर्शन करने के कारण गोपालकों को बहुत ही अनुकूल वातावरण मिलने के कारण ही बैल तथा दूधारु गो पालने में आसानी थी.

अमृतसर में स्वर्णमंदिर में पूरे विश्व से सिक्ख लोग बहुत ही बड़ी संख्या में आ रहे हैं.

अमृतसर में दूध तथा दूध की सभी वस्तुएं उपयोग की जाती हैं. अमृतसर के लोग गोमाता के दूध पीने के कारण ही सक्रिय, दयावान, उदार, साहसी, पराक्रमी, सेवाभावी हैं.

एसपीसीए

1964 से एसपीसीए अमृतसर हाथी गेट अमृतसर पंजाब 48 सालों से निरन्तर कार्य करते हुए भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई में पंजीकृत करवाकर तथा उनसे वित्तीय सहायता प्राप्त कर गोवंश की भावना को हर व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए इंटरनेट पर वेबसाइट, गांव गांव में पत्रक, पोस्टर, बैनर, फलेक्स के माध्यम से योजनाबद्ध तरीके से कार्य कर रही है.

लुधियाना पंचगव्य

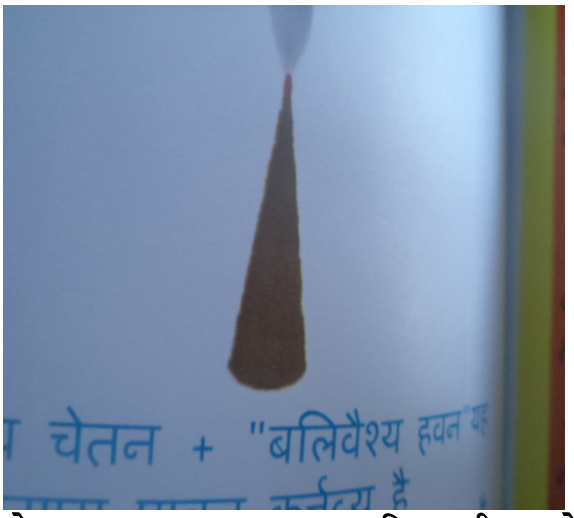

मोबाइल 09814036249 पर विश्व की सबसे बड़ी गोशाला राजस्थान पथमेड़ा में पृथ्वीमेड़ा पंचगव्य उत्पादन प्रा. लि. के द्वारा निर्मित सभी वस्तुएं उपलब्ध हैं.

श्री अनिल मेहता 9815951768, श्री सुखदेव गोयल 0161-2878116, श्री दलजीतसिंह 9417371426, श्री पु-प विठठल 9814040697, श्री अशोक धवन 9872428788 समर्पित सेवक हैं.

प्राचीन समय में गोवंश चरम सीमा पर था. गोवंश गोचर भूमि के कारण ही बहुत ही सुखी था. लुधियाना उद्योग एवं व्यापार के माध्यम से पूरे भारत में प्रसिद्ध है. पूरे भारत से लोगों का आवागमन साल भर बना रहता है. लुधियाना में आर्थिक सम्पन्नता बढ़ने के कारण ही उदारता के साथ गोवंश के संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए दान आ रहा है. नस्ल सुधार करने के लिए आधुनिक प्रयत्न जारी है.

3 गोशालाएं

लुधियाना में 3 गोशालायें बहुत ही विशाल क्षेत्र में मौजूद हैं. लुधियाना संतों की सेवा करने के लिए बहुत ही प्रसिद्ध है.

बाबा भक्ति नाथ गौशाला

11 जून 2003 बाबा शांति नाथ जी के द्वारा कामधेनु की सेवा करने के लिए रोपर रोड, मछिवारा, लुधियाना में की है. 25 सदस्य तथा 7 सहयोगी गाय और चारे के लिए नया शेड बनाने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं. धन मिलने पर गौशाला को स्वावलंबी बनाने के लिए पंचगव्य तथा जैविक खाद एवं गोबर गैस जैसी बहुत सारी योजनायें कार्य करेंगी.

सुशील लूथरा जी संचालक एवं अध्यक्ष 9814221242, श्री सुरिन्दर बंसल जी मंत्री 9814250065, केवल कृ-ण गोयल, टहल सिंह अंजला, कालू राम, डा. राजकुमार जी शर्मा एवं अन्य पदाधिकारी देशी गोवंश की नस्ल सुधारने के लिए सांढ तैयार कर रहे हैं.

300 गायें रखने की क्षमता वाली गौशाला में 12

लाख दान से प्राप्त होता है. 10 कनाल भूमि पर 10 पेड़ लगाकर देशी 28, दोगले 154, 1 विदेशी गोवंश रखकर कुल 183 गोवंश की सेवा 10 कर्मचारी कर रहे हैं.

गउ सेवा समिति

19 अगस्त 2001 को गउ सेवा समिति गौधाम, नजदीक स्वर्ग आश्रम, एल.आई.जी. कोलोनी, जमालपुर लुधियाना 141010 की स्थापना 390 गोवंश रखने के लिए किया गया है.

श्री महिन्दरपाल जैन चेअरमैन 9872155527, श्री प्रेमसागर अग्रवाल प्रधान 9814127042, श्री राजकुमार शर्मा महासचिव 9876110153 गोमूत्र फिल्टर प्लांट लगा हुआ है और गोमूत्र अर्क नि:शुल्क दिया जाता है.

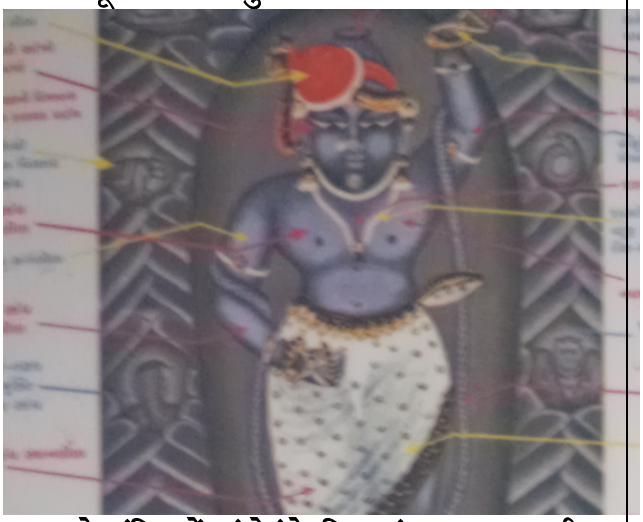

कृ-ण के मंदिर में संतो के लिए सुंदर व्यवस्था की गयी है. गोपा-टमी का विशे-ा महत्व है. गोपा-टमी के दिन बहुत ही उत्साह के साथ में युवा एवं बाल साथी पूजन करने के लिए विशे-ा तैयारियों के साथ में सामूहिक आते हैं.

गोशालाओं में गोवंश के दर्शन करने के लिए दूर दूर से लोग अपनी मनोकामनायें पूरी करने के लिए तथा अपने जन्मदिन, विवाह की सालगिरह जैसे महत्वपूर्ण दिनों में जरुर आते हैं.

गोशाला में बहुत बड़ी मात्रा में गोग्रास लोगों के निवास से हर दिन साइकिल रिक्शा के माध्यम से सुबह के समय में आ रहा है. गोशाला में प्रतिदिन बहुत बड़ी संख्या में लोग गोवंश की सेवा करने के लिए आते हैं.

पंचगव्य महो-धियां

गोवंश का महत्व असाध्य रोगों को पूरी तरह से दूर करने के लिए वैज्ञानिक तरीके से सफलता मिलने के कारण ही तेजी के साथ में बढ़ रहा है.

कामधेनु, सुरभि, बहुला, श्यामा जैसी गायों का गोमूत्र सर्वश्रे-ठ माना गया हे. गोमूत्र कपिला गाय का रामबाण है. गोमूत्र कपिला गाय का प्राप्त करने के लिए गोशाला में प्रतिदिन लोग आते हें.

गोमूत्र काली बछिया का सुबह के समय में बहुत ही अच्छा माना गया हे. सुबह के समय में काली बछिया का गोमूत्र पीने के लिए गोशाला में लोग तेजी के साथ में बढ़ रहे हैं.

पुराना गोमूत्र सांस की बीमारी के लिए बहुत ही उपयोगी है. पुराना गोमूत्र पुराने गुड़ के साथ में मिलाकर आसव तैयार करने पर मरीजों को बहुत ही जल्दी आराम मिल रहा है.

कुशल वैद्य के द्वारा जड़ीबूटियों के साथ में नारी संजीवनी, आसव, अर्क, घनवटी, बालपालरस, तक्रारि-ट जैसी अनेको सफल पंचगव्य दवाओं का निर्माण बहुत बड़े स्तर पर किया जा रहा है.

राजपुरा

राजपुरा में गोवंश प्राचीन समय में बहुत ही सुखी एवं आनन्द में था. प्रजा गोवंश के लिए हमेशा ही तत्पर थी. राजपुरा में आर्थिक सम्पन्नता तेजी से बढ़ रही है.

सम्पन्नता में वृद्धि के कारण ही दूध की मांग में वृद्धि हुई है. मांग के अनुरुप दूध उत्पादन पर पूरा ध्यान दिया गया है. दूध के उत्पाद मक्खन, दही, छाछ, मिठाईयां बहुत ही पसंद की जा रही हैं.

राजपुरा में देशी गोवंश के रक्षण करने के लिए जागरुकता है. गोशालाओं में हर घर से प्रतिदिन गो ग्रास के एकत्र करने में रिक्शा की भूमिका महत्वपूर्ण है. गोपा-टमी के दिन बहुत ही धूमधाम के साथ में पूजन करने के लिए सुबह से रात्रि तक गोशालाओं में लोग जाते हैं.

राजपुरा में गोवंश की नस्ल सुधारने के लिए नये सांड गोवंश विकास केंद्र में तैयार किये गये हैं. गोवंश के संवर्धन करने के लिए अपार धन लोगों के द्वारा बहुत ही उदारता के साथ दिया जा रहा है.

मलेरकोटला

श्री सुरेंद्र सिंघल 9814581133, श्री हंसराज 01675-240017, श्री सुरेन्द्र सिंह सिंघला 272764 रा-ट्रीय गौरक्षा संयुक्त संध-र्ा मोर्चा के लिए समर्पित हैं.

भोरवी

श्री भगवानदास गोयल जी प्रधान मोबाइल 9872614783 के द्वारा दिसम्बर 1988 को गोशाला कमेटी, सुनाम रोड, भोरवी 151504 तहसील एवं जिला मानसा की स्थापना की गयी है.

9,54,800 रु. की कुल प्राप्ति के साथ में भी धन के अभाव में अच्छी सेवा का अभाव है. 2010-11 में 17,50,000 रु. खर्च कर काफी परिवर्तन करने के लिए प्रयत्न किया गया है. मक्का, बाजरा उगाया जा रहा है. वर्तमान में मात्र 50 क्विींटल चारा उगाया जाता है.

4 पदाधिकारी, 21 सदस्य, 21 सहयोगी गोशाला में गायों के लिए शेड बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं.

3 एकड़ भूमि पर 12 कर्मचारी वर्तमान में देशी गोवंश कुल 190, दोगले गोवंश 160, विदेशी गोवंश 133 की सेवा कर रहे हैं.

मुक्तसर

भरद्वाज गोशाला

श्री क्रांति कुमार सोहनलाल भारद्वाज के द्वारा 1 जनवरी 2007 में गोनियाना, मुक्तसर साहिब 152026 9464311497 में स्थापित की गयी है. गाय रखने की क्षमता 50 है. कुल प्राप्ति 1,80,000 रु. है तथा आमदनी की आवश्यकता है. देशी गोवंश 21, दोगले गोवंश 10, विदेशी गोवंश 10 की सेवा 1 कर्मचारी कर रहा है.

मोहाली

पंजाब गो सेवा कमीशन

6 ठवां तल्ला, फोरेस्ट भवन, सेक्टर 68, मोहाली मोबाइल 8054048600 श्री कीमतीलाल भगत अध्यक्ष, श्री देवीदयाल पराशर उपाध्यक्ष 9815156928, डा. धर्मपाल, श्री सुन्दरदास दमीजा, श्री पवन जैन, डा. विन्दसर जी शुक्ला, श्री किशन शर्मा जी पदाधिकारी हैं. 14 लाख गोवंश हैं. 400 गोशालायें पंजीकृत हैं. कुछ कुछ गोशालायें पंचगव्य महो-धियां बनाती हैं.

गोशाला कमेटी

1961-62 में श्री रमेश गुप्ता जी प्रधान 9041316942 एवं श्री यतेनद्र मोदगिल जनरल सेक्रेट्री 9876499610 के द्वारा गोशाला कमेटी बस्सीपडाना जिला फतेहगढ साहिब में 33 लाख खर्च कर 236 देशी एवं दोगले गोवंश 17,500 वर्गगज भूमि पर रखने के लिए स्थापित की गयी है.

वर्तमान में मात्र 10 पेड़ लगाये गये हैं. दूध का भाव 30 रु. लीटर है. 720 क्विंटल दूध हर साल होता है जिससे 22 लाख की प्राप्ति होती है. 25 लाख की आवश्यकता चारे के लिए शेड बनवाने के लिए है.

फगवारा

फगवारा में प्राचीन समय में गोवंश के सुख के लिए गोचर भूमि बहुत ही अधिक रखी गयी थी. फगवारा में गोवंश के संरक्षण करने के लिए बहुत ही अधिक जागरुकता है. गोपा-टमी के दिन लोगों में गोवंश के सामुहिक पूजन करने के लिए पहले से विशे-ा तैयारियां की जाती हैं.

फगवारा सम्पन्न है इसलिए दूध की आवश्यकता भी अधिक है. दूध की पूर्ति करने के लिए देशी गोवंश की आवश्यकता है. गोवंश के विकास करने के लिए वर्तमान में गोवंश संवर्धन केंद्र विकसित किये गये हैं.

पटियाला

श्री दर्शन कुमार कक्कड़ 9815550102, श्री सतपाल अरोड़ा 9417045339, श्री महिन्द्रसिंह 9417403164, श्री रामधर गर्ग 9463890457, श्री नारायण कुमार गर्ग 9814629426, श्री सुरेन्द्र कुमार पुरी 9815494253, श्री मदनलाल 01624-222111, श्री हरीश मल्होत्रा 9417015826, श्री सुदेश गोयल 9814200100, श्री प्रेमसागर अग्रवाल 9814127042, श्री सुरजभान सिंगला 9855480042 रा-ट्रीय गौरक्षा संयुक्त संघर्-ा मोर्चा के लिए समर्पित कार्यकर्ता हैं.

प्राचीन समय में अपार गोवंश मौजूद था. गोचर की भूमि में 12 माह हरी हरी घांस उगने के कारण गोवंश बहुत ही प्रसन्न थे. नित्य हवन करने की परम्परा मौजूद थी. अग्निहोत्र कृ-ि करने के कारण ही लोग दीर्घायु एवं पूरी तरह से निरोगी थे.

गोपा-टमी के दिन बहुत ही धूमधाम के साथ में मेले के समान ही सामूहिक पूजन किया जाता था. पटियाला गोवंश के संवर्धन करने के लिए बहुत ही जागृत केंद्र हैं तथा दूध की तेजी से बढ़ती मांग को ध्यान में रखकर गोशाला में गोवंश महाविज्ञान का उपयोग कर नये सांढ विकसित किये गये हैं.

मोगा

गोपाल गोशाला

80 साल पहले गोपाल गोशाला गांधी रोड मोगा 142001 दूरभा-ा 01636-236708, 237708 कामधेनु की सेवा करने के लिए स्थापना की गयी है.

10 एकड़ भूमि पर 50 पेड़ लगाकर हरा चारा उत्पन्न कर नस्ल सुधार करने के लिए प्रयत्नशील हैं. 200 लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादन किया जा रहा है. 35 रु. किलो दूध बेच रहे हैं.

4 पदाधिकारी 18 सदस्य, 24 सहयोगी सरकार से सहायता प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हैं.

505 देशी गोवंश, दोगले गोवंश 193, 113 विदेशी जानवर कुल 811 की सेवा 28 कर्मचारी कर रहे हैं. जैविक खाद तथा जैविक फसलरक्षक तैयार कर रहे हैं.

श्री भोला सिंह 9814483673, श्री मंजित बंसल

खुली गोशाला 9814400718, श्री श्यामलाल अग्रवाल 9855610149, श्री चमनलाल गोयल 9814823723, श्री जोगिन्द्रपाल सौद 9815014357 रा-ट्रीय गौरक्षा संयुक्त संघर्श मोर्चा के लिए समर्पित कार्यकर्ता हैं.

प्राचीन समय में गोवंश चरम सीमा पर था. गोचर की भूमि के कारण ही गोवंश बहुत ही प्रसन्नचित्त था. हवन की परम्परा प्राचीन समय से मौजूद थी. गोपा-टमी के दिन हर घर से गोशाला में गोवंश का पूजन एवं अर्चना वेद मंत्र के साथ में किया जाता था.

मोगा गोवंश के विकास करने के लिए बहुत ही सम्पन्न केंद्र है. गोवंश के महत्व को ध्यान में रखकर पंचगव्य महो-धियों को तैयार करवाकर असाध्य रोगों को दूर करने के लिए प्रयत्न किया जा रहा है. मोगा में दूध की मांग बहुत ही तेजी के साथ में बढ़ रही है. दूध के उत्पादन करने के लिए मोगा में उदारता के साथ गोवंश के विकास करने के लिए दान दिया जाता है.

फरीदकोट

श्री पवन कुमार मित्तल 9872428788 रा-ट्रीय गौरक्षा संयुक्त संघर्-ा मोर्चा के लिए समर्पित हैं.

श्री पंचायती गोशाला 9417185888 फरीदकोट में सक्रिय है.

प्राचीन समय में गोवंश बहुत ही आनन्द एवं सुखी था. फरीदकोट गोवंश विकास करने के लिए अनुकूल है. गायों के दूध की बहुत ही अधिक मांग है. गोमूत्र का वैज्ञानिक महत्व तेजी के साथ में विश्व में समझ में आ रहा है. गोमूत्र पीने के लिए मानसिकता बन गयी है. गोशाला में गोमूत्र पीने वाले तेजी से आ रहे हैं.

गोमूत्र से तैयार पंचगव्य दवाएं नारी संजीवनी, बालपालरस, प्रमेहारी, आसव, अर्क की मांग है. गोबर से बनने वाला मलहम, दंतमंजन आदि बहुत ही बिक रहा है. गायों की सेवा पूरी नि-ठा के साथ में करने के कारण ही गोशाला में दूध उत्पादन उल्लेखनीय है.

बटाला

प्राचीन समय में गोपा-टमी का त्यौहार हर घर में सपरिवार बहुत ही उत्साह के साथ में मनाया जाता था. सुबह से संध्या तक गोवंश की पूजा अर्चना वेदमंत्रों के साथ में की जाती थी. लोगों के अंदर उत्साह देखने लायक था. प्राचीन समय में गोवंश चरम सीमा पर था. गोचर भूमि हरी घांस से भरपूर थी.

गोमाताएं दूध देकर लोगों को दीर्घायु बना रही थी. निरोगी रहने के कारण ही हवन नित्य कर रहे थे. बटाला गोवंश के विकास करने के लिए बहुत ही ताकतवर केंद्र है. गोवंश की बहुत ही अच्छी सेवा करने के कारण ही दूध उत्पादन निरन्तर बढ़ रहा है.

अम्बाला

औदुम्बर

उदुम्बर में राज करने वाले राजाओं के बारे में पानीनी के गणपत प्रकरण में बहुत ही विस्तार से वर्णन किया गया है. ईसा से 200 से 100 साल पूर्व में उनके वंशज औदुम्बर के नाम से जाने गये थे. महाभारत में गणास का उल्लेख औदुम्बर के रुप में किया गया है. वि-णु पुराण में कांगड़ा तथा अम्बाला क्षेत्र में निवास करने वाले कुन्निदा जाति का उल्लेख औदुम्बर के रुप में किया गया है. गोवंश विरोधियों को पूरी तरह से कुचल दिया गया था. मांस के बेचने के लिए एक भी दुकान नहीं थी. गोवंश की संख्या मानवों से बहुत ही अधिक थी.

प्राचीन समय में गोवंश चरम सीमा पर था. गोवंश को गोचर भूमि की अधिकता के कारण 12 माह हरी हरी घांस मिल रही थी. अम्बाला में एक समय गोवंश के संरक्षण करने के लिए जागरुकता चरम सीमा पर थी. मेले गोवंश के विकास करने के लिए लगाये गये थे.

अम्बाला में उद्योग एवं व्यापार बहुत ही अच्छा रहने के कारण ही सम्पन्नता चरम सीमा पर है. अम्बाला में गोवंश का पालन निवास में किया जाता है. अम्बाला में दूध उत्पादन काफी अच्छा हो रहा है. पानी की सुविधा है इसलिए हरी घांस भरपेट मिलने के कारण गाय दूध अधिक देती हैं.

गोमूत्र का उपयोग किसानों के द्वारा खेतों में फसलरक्षक के रुप में किया जा रहा है. हर घर में पवित्रीकरण करने के लिए किया जा रहा है.

गोबर का उपयोग खेतों में किया जाता है. अम्बाला में गोवंश महाविज्ञान का ज्ञान बहुत ही अच्छा है.

गोशाला

अम्बाला में गोशाला बहुत ही सुंदर है. गोपा-टमी के दिन लोगों के द्वारा सुबह के समय से ही पूजन किया जाता है. गोवंश के विकास करने के लिए उदारता के साथ में दान दिया जाता है. विशे-ा तैयारियां कर संध्या के समय में मंच पर कार्यक्रम किया जाता है.

गोशाला में बहुत ही अच्छी नस्ल के सांढ विकसित किये गये हैं. गोशाला में बीमार एवं कमजोर लोगों को दूध, पंचगव्य दवाएं आसानी से कम मूल्य पर उपलब्ध है. लोगों के द्वारा हर उत्सव में गोशाला में बहुत ही सहयोग है. अम्बाला में गोवंश पालन करने के लिए लोगों में लगाव है.

गुरदासपुर

श्री रामकुमार अग्रवाल 01871-240888 रा-ट्रीय गौरक्षा संयुक्त संघ-र्ा मोर्चा रा-ट्रीय गौरक्षा संयुक्त संघ-र्ा मोर्चा के लिए समर्पित हैं.

प्राचीन समय में गोवंश की संख्या चरम सीमा पर थी. गोवंश को हरी हरी ताजी घांस 12 माह मिल रही थी. गोपा-टमी के दिन बहुत ही उत्साह के साथ में गोशालाओं में मेले जैसा वातावरण रहता था. गोवंश का पूजन एवं अर्चना वेदमंत्रों के साथ में की जाती थी.

प्राचीन समय में हर घर में नित्य सपरिवार अग्निहोत्र हवन किया जाता था. गुरदासपुर में गोवंश का विकास एक समय में चरम सीमा पर था. गोवंश के माध्यम से लोग बहुत ही सुखी थे. गोचर की भूमि का विकास किया गया था. मेले गोवंश के विकास करने के लिए लगाये गये थे.

गुरदासपुर दूध उत्पादन के लिए मुख्य केंद्र है. गुरदासपुर में गोवंश से गहरा लगाव रहने के कारण ही गोवंश का विकास बहुत ही अच्छी तरह से किया गया है.

अच्छी नस्ल के सांढ गोशालाओं में विकसित किये गये हैं. गोमाताएं 12 माह बहुत ही अधिक दूध देती हैं. दूध से तैयार उत्पाद का उपयोग दैनिक जीवन में त्यौहारों के समय में किया जाता है. पंचगव्य का उपयोग दैनिक धार्मिक कार्यों में किया जाता है.

जालंधर

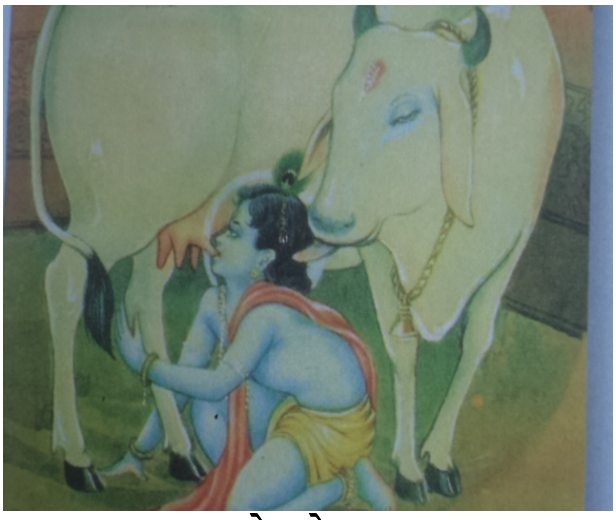

कामधेनु गोशाला

श्री आशुतो-जी महाराज के द्वारा कामधेनु की सेवा करने के लिए स्वामी चिन्मयानंद मोबाइल 9815930186 स्वामी इंद्रेशानंद जी 9915761825 कामधेनु गोशाला नकोदर सड़क, नूरमहल, तहसील फिल्लौर, जिला जालंधर 144039 स्थापित कर चुके हैं.

श्री आशुतो-ा महाराज जी दिव्य ज्योति जागृति संस्थान के माध्यम से विश्व में अच्छे सांढ तैयार करने के लिए संकल्पित हैं.

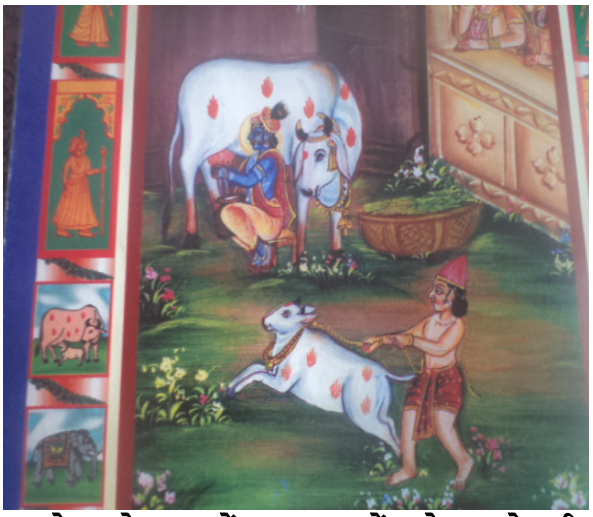

कामधेनु गोशाला में 500 गायों को रखने की क्षमता है तथा समय के साथ में क्षमता का पूरा उपयोग किया जायेगा. 50 बछड़े तथा 85 बछड़ी नस्ल सुधार करने के लिए तैयार की जा रही हैं.

30 सदस्य, 5 सहयोगी मिलकर गोमूत्र से अनेक वस्तुएं उच्च गुणवत्ता के साथ में बनाते हैं. 2 प्रतिशत प्राप्ति गोमूत्र के उपयोग से हो रही है. दूध का उपयोग आश्रम में किया जाता है.

वर्तमान में 400 देशी गोवंश 25 एकड़ में रखकर 25 कर्मचारियों के द्वारा मक्की, बरसीम, बाजरा उत्पन्न कर सेवा की जा रही है. मिश्रण नस्ल के सांढ खराब नस्ल दे रहे हैं. गोशाला में वर्तमान में अच्छे सांढ की आवश्यकता है.

श्री सुरेन्द्र धीर बिल्लु 9876064264 रा-ट्रीय गौरक्षा संयुक्त संघ-र्ा मोर्चा के लिए समर्पित हैं.

प्राचीन समय में जालंधर में दूध की अधिकता गोमाताओं के बहुत ही अधिक दूध देने के कारण थी. गोचर भूमि की अधिकता के कारण 12 माह हरी घांस गोवंश को मिलती थी. जालंधर में लोगों का जीवन स्तर गोवंश के विकास करने के कारण बहुत ही अच्छा है. गोपा-टमी के दिन गोवंश का पूजन वेद मंत्रों के साथ में सुबह से ही किया जाता है. प्रभात फेरी निकाली जाती हे.

हर घर में गोवंश के लिए बहुत ही अधिक ममता है तथा सेवा करने के लिए लालसा रहती है. जल का स्तर अच्छा रहने के कारण ही खेती बहुत ही अच्छी हो रही है. 12 माह हरी घांस उगाकर भरपेट गोवंश को खिलायी जाती है.

जालंधर दूध उत्पादन के लिए पंजाब में प्रमुख केंद्र है. जालंधर गोवंश के लिए बहुत ही प्रसिद्ध है. अच्छे सांढ विकसित कर गांव में नस्ल सुधार करने के लिए उपयोग किये जाते हें. गोमाता के दूध का उपयोग अपनी दिनचर्या में सबसे अधिक किया जाता है. गोशाला बहुत ही पुरानी है तथा गोशाला में अच्छी नस्ल तैयार की जा रही है.

संगरुर

बाबा परमानन्द गउशाला

15 अगस्त 2008 को श्री शिवदयाल जी शर्मा के द्वारा नीलोवाल रोड बक्सीवाला सुनाम संगरुर 01676-226517, 221517 में की गयी है.

हरा चारा, दाना, खल, फल आदि उपजाकर 5 कर्मचारियों की सहायता से 2 कनाल 16 मरले पर 40 पेड़ लगाकर 85 देशी गोवंश, 8 दोगले गोवंश, 12 विदेशी गोवंश रखे गये हैं.

प्राचीन समय में साहीवाल गोवंश की चरम सीमा के लिए बहुत ही प्रसिद्ध था. गोचर भूमि में 12 माह हरी हरी घांस उगने के कारण गोमाताएं बहुत दूध देती थी. संगरुर दूध उत्पादन करने के लिए काफी आगे है.

संगरुर में गोवंश पालन करने के लिए लोग काफी समर्पित हैं. गोशाला काफी पुरानी है तथा गोग्रास के लिए हर घर से सहयोग मिल रहा है.

गोपा-टमी का विशे-ा महत्व है तथा गोवंश के पूजन करने के लिए युवाओं के द्वारा विशे-ा तैयारियां की जाती हैं.

भटिंडा

अनाथ गउ आश्रम

1978 में श्री पृथ्वीचंद सरस्वती जी ने अनाथ गउ आश्रम फैक्ट्री रोड, रामपुराफूल जिला भटिंडा 151103 दूरभा-ा 01651-233321 की स्थापना की है. हरे चारे के लिए भूखंड की आवश्यकता है. भूसे को रखने के लिए बड़े गोदाम की आवश्यकता है. गोबर का उपयोग किसान खेती के लिए कर रहे हैं.

41,85,250 रु. की कुल प्राप्ति के साथ में 450 गोवंश जिनमें दोगले गोवंश शामिल हैं की सेवा 13 कर्मचारी कर रहे हैं. गोमूत्र से अर्क बना रहे हैं.

श्री अमरजीतसिंह 9417272926, श्री अशोक कुमार मित्तल 9814232059, श्री परमेश्वरदास 01655-230011, श्री अशोक कुमार गर्ग 9872821096, श्री राज कुमार लेले 9417225609, श्री राजेंद्र कुमार 9417035643 समर्पित कार्यकर्ता हैं.

प्राचीन समय में गोचर भूमि की अधिकता के कारण साहीवाल गोवंश की संख्या चरम सीमा पर पहुंच गयी थी. 12 माह हरी घांस मिलने के कारण ही गोमाताएं बहुत ही दूध देती थी. गोवंश के विकास करने के कारण पंजाब में भटिंडा उद्योग एवं व्यापार में काफी आगे है. गोवंश के विकास करने के लिए अपनी आय का सबसे अधिक धन उदारता के साथ में लगाया जाता है.

भटिंडा दूध उत्पादन करने के लिए बहुत ही प्रमुख केंद्र है. गोशाला बहुत बड़े क्षेत्रफल में विकसित की गयी है. गोग्रास हर निवास से प्रतिदिन सुबह के समय में रिक्शा चालकों के माध्यम से एकत्रित कर गोशाला में पहुंच रहा है.

होशियारपुर

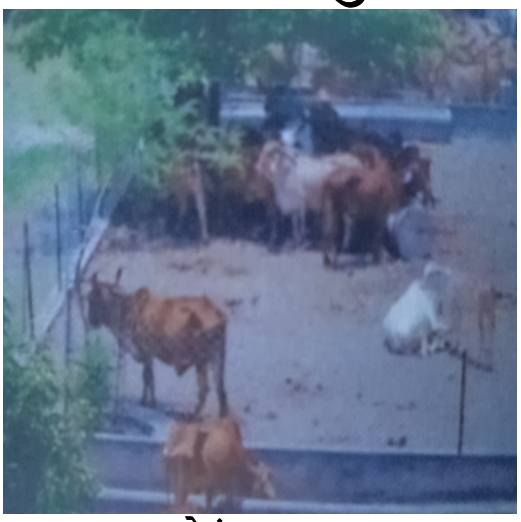

गोसंरक्षण सभा

2001 में श्री अवतार कृ-ण शर्मा जी के द्वारा गौ संरक्षण सभा की स्थापना की गयी है. वर्तमान में 350 सदस्य हैं तथा 2 सहयोगी हैं. 12 लाख की प्राप्ति है. गोबर गोमूत्र से खाद बनाते है. 100 क्विंटल दूध हर साल होता है. दूध का भाव 30 रु. लीटर है. 3 लाख दूध से प्राप्त होता है.

3 एकड़ भूमि पर 3 कर्मचारी 150 देशी गोवंश की सेवा कर रहे हैं.

पंडित केवल कृ-ण शर्मा 01882-222214 रा-ट्रीय गौरक्षा संयुक्त संघर्-ा मोर्चा के लिए समर्पित हैं.

प्राचीन समय में गोवंश अपार था. गोचर भूमि के कारण ही हरी घांस 12 माह मिलने के कारण गोवंश प्रसन्नचित्त एवं सुखी था. प्राचीन समय में विशाल मेले गोवंश के लिए लगाये गये थे.

होशियारपुर में हरियाणा गोवंश के लिए काफी अधिक जागरुकता है. गोमाता का दूध धारो-ण पीने से बुद्धि का विकास अच्छी तरह से होने के कारण सम्पन्नता बहुत ही अच्छी है.

व्यापार अच्छा है तथा गोवंश के लिए हर घर से दान करते हैं. गोवंश के कारण ही गोरे उंचे एवं सुंदर लोग हैं. गोमाता का दूध पीकर ईमानदार तथा मेहनती लोग हैं.

गोपाल गोधाम महातीर्थ, सुलतानपुर लोधी

श्री प्रमोद गुप्ता जी अध्यक्ष के द्वारा गोपाल गोधाम महातीर्थ, सुलतानपुर लोधी 144626 मोबाइल 9876733752 देशी गायों के संरक्षण करने के लिए स्थापित किया है. जनता का सहयोग बहुत ही अच्छा है. जनता से 10 लाख मिल रहा है.

वर्तमान में गोशाला में गाय रखने की कुल क्षमता 221 है. अच्छे गोवंश रखने का विचार है.

श्री अनिल भोला चेयरमेन 9814209020, श्री घनश्याम धीर उपाध्यक्ष 9815273004, श्री कमल चावला उपाध्यक्ष 9814326932, श्री दीनदयाल सचिव 9814077745, श्री ममहेन्द्र उपल सदस्य 9815155764, श्री सतपाल अरोड़ा सदस्य 9888271796 पूरी तरह से समर्पित हैं.

2 लाख रु. हर साल गोशाला में बचता है. जैविक हरा चारा उगाते हैं. वर्तमान में 20 नंदी हैं. देशी नंदी खरीदने के लिए प्रयत्नशील हैं.

हर साल 1 लाख लीटर दूध उत्पन्न होता है. दूध का भाव 28 रु. लीटर है. 9 सदस्य तथा 2 सहयोगी वर्तमान में गायों के चारे के लिए जमीन खरीदने के लिए प्रयत्नशील हैं.

गोबर गोमूत्र से अमृत पानी घोल तथा गोबर किसानों को खेती के लिए देते हैं. गोबर गोमूत्र से 2 लाख रु. प्राप्त होता है.

गायों को किसानों से जोड़ने के लिए सतत प्रयत्न जारी है. 3000 पेड़ गोशाला में लगाये गये हैं.

122 देशी गोवंश, 77 दोगले गोवंश, 22 विदेशी गोवंश 2.5 एकड़ भूमि पर रखे गये हैं.

खन्ना

नस्ल सुधार

श्री गोवर्धन गोशाला खन्ना पंजाब में अपार धन के साथ में तथा विशाल भूमि पर समर्पित लोगों के साथ में 1400 गोवंश रखकर उनकी बहुत ही अच्छी सेवा की जा रही है.

साहीवाल

सरकार से 100 साहीवाल गायों को नस्ल सुधार करने के लिए दिया गया था. साहीवाल गाय से बहुत अधिक दूध मिल रहा है. दूध देने वाली गायों को बहुत ही अच्छा खिलाया जाता है. नस्ल सुधार करने के लिए सांढ विकसित किए गये हैं.

स्वावलंबन

गोशाला में आय अधिक आने के कारण ही पूरी तरह से स्वावलंबी है. गोशाला को हर माह 2 लाख रु. नगद मिल जाता है. गोशाला में मरने वालों के लिए लकड़ी की व्यवस्था भी की गयी है. गोशाला में सिक्के एकत्र करने के लिए दान की पेटियों की व्यवस्था की गयी है.

गोपा-टमी

गोपा-टमी का त्यौहार बहुत ही उत्साह के साथ में मनाया जाता है. गोपा-टमी के दिन सुबह से संध्या तक गोवंश का पूजन वेद मंत्रों के साथ में किया जाता है. गोवंश को मिठाई खिलायी जाती है. हजारों लोग गोशाला में एकत्र होते हैं. लोगों के द्वारा गोशाला को बहुत अच्छा दान दिया जाता है. गोपा-टमी के दिन गोवंश पर बड़े उत्साह के साथ प्रवचन का आयोजन होता है. सुबह प्रभात फेरी गोशाला से निकाली जाती है.

उपचार

गोवंश की चिकित्सा करने के लिए एक सरकारी चिकित्सक तथा 1 सेवा निवृत चिकित्सक रखा गया है.

आहार

सुबह 4 बजे से ही हरे चारे को बारीक कटवाकर खिलाया जाता है.

दूध वितरण

दूध का वितरण सुबह 5 बजे प्रारम्भ किया जाता है. संध्या के समय में भी दूध का वितरण किया जाता है. गोशाला में कार्य करने वाले सेवकों को 1 लीटर दूध दिया जाता है. बहुत ही कम मूल्य पर दूध बेचा जाता है.

पंचगव्य दवाएं

काली गायों का गोमूत्र प्रतिदिन ब्रहम मूहर्त में एकत्र कर उनकी दवाएं अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रशिक्षित व्यक्ति से बहुत बड़े स्तर पर तैयार की जा रही हैं.

प्रचार

10,000 पत्रक दूध, दही, छाछ, मक्खन, घी के गुणों को विस्तार से छपवाकर पूरे खन्ना में बटवाकर गोमाता के लिए मानसिकता तैयार करने का प्रयत्न किया गया है. वर्तमान में पंजाब में भैस का महत्व चरम सीमा पर है.

पंचगव्य दवाओं का वितरण सुबह उठकर गोपालकों के माध्यम से रिक्शाओं 14 से पूरे नगर में हर घर में किया जाता है. हर घर से गोशाला के लिए गोग्रास रिक्शा के माध्यम से एकत्रित किया जाता है.

गोग्रास

रिक्शा चालकों को 100 किलो गोग्रास की रोटी एकत्र करने पर 40 रु. नगद दिया जाता है. गोग्रास के साथ में नगद धन भी लोगों के द्वारा दिया जाता है.

वैद्य

गोशाला में लगभग 2000 से अधिक मरीज दवा लेने सुबह 5 बजे से रात्रि 9 बजे तक आते हैं. वैद्य के द्वारा मरीज के हर पहलू पर पूछताछ कर पेशाब, खून की गहन जांच कर परहेज करने के लिए समझाया जाता है. अनुभवी एवं मिलनसार वैद्य के मार्गदर्शन में पंचगव्य दवाओं के माध्यम से असाध्य रोगों का उपचार सफलता के साथ में किया जाता है.

छाछ

मरीजों को चांदी के बर्तन में दूध को जमाकर दही से तीन गुना पानी मिलाकर छाछ पीने के कारण बहुत अधिक लाभ मिल रहा है. छाछ को मीठी नीम की पत्ती, सेका हुआ जीरा, काली मिर्च, पीपली, सेंधा नमक, काला नमक आदि मसालों के साथ मिलाकर पीना है.

शिविर

गोशाला में बाहर से अनुभवी वैद्यों को बुलवाकर शिविरों का भी आयोजन किया जाता है. शिविरों के बारे में प्रचार बहुत ही अच्छी तरह से किया जाता है. प्रचार के कारण ही शिविरों में दूर दूर से मरीज दिखाने के लिए आते हैं.

पूरे पंजाब में 384 गोशालाओं में भी इसी तरह से वितरण की व्यवस्था की गयी है.